



॥ विष्णुस्तोत्र ॥

॥ वाग्विष्णोर्मानसा वक्त्रे त्रैलोक्यं प्रवक्ष्यामि ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
मा विममय मृदकांतिदहा जागय धाम पद्मं निव ॥ श्रीदिः
गुणोत्तमाव विष्णुश्च नील अननक ननु मिः सखे भव सखे वमाय ॥ न
चमैः पुनसक्तिर्ग ॥ जाक जाकिनी सर्वग गणयापि न पूजिते वजा चार्थे ॥ गि
समाधिआ गमनु विन्यास ॥ स्वस्वदवप विपूः काष्ट नाराने ननु न्यय न्यय ॥
अद्यय न सवदियाव ॥ ॐ ॥ विश्वकृति ससधु काय आर्ग ॥ कदा र्गि दुवशा
व ॥ विश्वपंकज मध्व अद्यय न्यय ॥ सर्वदव सक्तिर्ग ॥ ॐ ॥ गुनचव पसिधम

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

गधर्वाया ॥ रुनयि कथागत वजार गिरुवनयापि न गत्व स्वराव ॥ रुनिं देवाव
गणविना ॥ ॐ ॥ २ ॥ वागलसिने ॥ नात्र प ॥ परस्व सफ चन्द्रमाय धा
वीय वागि गोव वसवा चनीय ॥ विनी सवन वास गृहा प्रगाभ ॥ वीना सध गनानि न
पुतिरु ॥ ॥ अनुक चकथा गाव व काल गाव वन पय विणिग विविण क
नमं २ ॐ आङ्काल वका मरुदक सफ स ॥ धित क्षानामरु मय च ज्ञान न
नवम वाधिरुल पायक सचिदिन व्यापिग सरुजा क न र्ग २ गगन मन्त्र ॥ धित

मृत्युकन (॥) रु वं सीसावनामने विवक्तृपे ॥ वक्रपवमान मयं गंधान्दुसैरुका
 संस्तसं (॥) धिगय अपिपूरुवैरुकातमलपूष्यमगवधने वक्रमस्थापितपिपा
 ककजसै ॥ ५ ॥ यदमनर्यं ग कफ नृपरावै आकृष्टमठा किनि ड म न दी
 वृत्तिटिसाधवन दवगावक क्षानसत्तसा निर्मय द्वादिठकीवनी ॥ ५ ॥
 दिमावमने दानपूजसवन समयचक्रप वनित विमदकदसं रमहजागददि
 मय वाधिविरु नृप समयसत्त क्षानचक्र म किपुनी ॥ ५ ॥ ३ ॥ नागनाग ॥

नृप
 रुवंगमरुका धनवाधनाग सुवर्णगोपेन निरुसूनमप सयामरुम ॥
 धिगनैध नासि नागायसक कथिगीधनाथी ॥ ॥ वक्रवर्ण
 प्रियवायसन्दरीरु अष्टादशरुतननुकिव (॥) एकादवीवाजनीनामदि
 दवी ॥ ५ ॥ रुगनपुमादिनमयनसुव (॥) ५ ॥ आगामुवदपूषानवधा
 वरुजागधनमदिनागु नृडयद (॥) ५ ॥ पेशवृद्धसवृपयो एकादमदसु
 जाविनिनेयारुववगुदुववा ॥ ५ ॥ मगुगुवृचननमिनीतधविथा रुनयि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वाकवदसना ^{मन} नपिनि ॥ ॐ ॥ ४ ॥ वागरोववी ॥ नीलासकानं कनकम
यकि स्यामासकगी दधिगुसाध सापुदधान दवकविपदीष्ट ॥ ॥ ॐ ॥ कददन
यक सानस्वयं यथय ^{विष्णु} वसयथ साविपुडिया ॥ ॐ ॥ पुमादववतिवाय
शितनवीना ॥ वीवंसवापकमया आनन्द ॥ ॐ ॥ वीवंवीदध्ववसरुजा आनन्द
श्कनकमलोमकदया आनन्द ॥ ॐ ॥ पश्चद्वयपश्चकन्धनस्वयं यथ
दवास्वननव यमादिनदया ॥ ॐ ॥ ॐ आ ४ हू जी खे गा धनकविग २ ३

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मन्त्रव ॥ धनिवीवमा आनन्द ॥ ॐ ॥ ४ ॥ वागरोववि ॥ अथवातलिक
॥ केशनीलाङ्गन पश्चसानस्वरावश्क कालगुववीजमस्यन्ना ॥ ॐ ॥ निव
निगमदासास्वरावमासकि सवसन्दवीतवडीवनि ॥ नमामि श्रीवानुनिवसि
दिजा न्द गेयशंसमस्यन्ना ॥ आनिर (गपव विनयनसक्तिका एकमुखपि
वाचनीदवी ॥ ॐ ॥ अहादगहजधावि ककवधकवाज सवकपदिमियक
नरपागी कभाषयवधजगतावजानवभवदयथमसकव ॥ ॐ ॥ अय

उद्धृष्टकधनवज्रवंध स्वर्गो गकमवधवन्तं २ गि गृह्णन्तु गल वज्रवनगः प्रयति
 दनकमारुतः ॥ ॐ ॥ उद्धृष्टकधनवज्रवंध स्वर्गो गकमवधवन्तं २ गि गृह्णन्तु गल वज्रवनगः प्रयति
 तनीतवज्रवंधिनीसंकुतवाचनीः पवनमायवज्र जयमावा ॥ ० ॥ ॥ वा ॥ वा
 मधुमग ॥ अथवाकज्ञान ॥ नीतवज्रवाचनीदवीः चकीकृत्तकठिनायक
 सखनारुषिगात्रयधविगा २ ससमानमराकिरीपूजिगा ॥ ॥ स्वस्वदीजा
 कने ४ समस्त्यनादवीमामकि ॥ ॥ नमामि २ दवीथीमामकि तवजीवनि जि

श्रीगवधु ॥

नमस्तनसन्दरी ॥ ॐ ॥ पञ्चकृत्तकठिनायक सखासवनवधवन्तं ४ वन्दिताचव ॥
 ॐ ॥ ॥ वागवनि ॥ गावमाथीपीनवधुमामकिदवीः विधवापिगा २ अम
 साधनयगात्रनिदवी ॥ नवजीवनरीता ससवनसन्दरीः स्वस्वदिजाकनसमस्त्यना
 ॥ चकीकृत्तकठिनायक सखनारुषिगा २ वजनरुक्तागणहविगा ॥ ॐ ॥ नमामि
 वात्रनिदवीसखधवीः पूजयामिमनावाहिगा ॥ सगरुत्रचव ॥ प्रथमानितक्या
 अनरुनसिद्धिमाकसंपद ॥ ८ ॥ अथनवकवधुमाव ॥ वागक ॥ गावषट्कज्ञान

श्रीगवधु ॥

श्रीगवधु ॥

॥ रुविगवर्धनी प्रिनयनसुन्दरी नवशोवर्धनी जवनदम्भता ॥ ॐ ॥ एकादशी
 मामकिवात्रिदशी ॥ अष्टादशहस्तः रुतनलुकिव ॥ यश्च वृद्धस्वयं पा एका
 कान्तिवशी ॥ ॐ ॥ रुकावनरुविगवर्धनी सावातगन्धनासर्न किंकाथवशीर्य
 हंताश्च अमृताकावर्णुवयत ॥ ॐ ॥ सतमुत्रचव ॥ गिरगन्धविद्या रतन
 यिसिद्धिवर वजाचार्यगीता ॥ ॐ ॥ १ ॥ वागयश्चैरुति ॥ यश्च मस्तपाश
 वागनामक ॥ सानूमठुतमाक कलितहकावा २ आलिकालिहृथिचापयि

॥ रुविगवर्धनी ॥

दत्रका ॥ ॐ ॥ नमामिगीनीतावम्बितरुवननाथा २ वरुवावादिआतिर्गन
 अदय ॥ ॐ ॥ रुद्रवर्धनवदनप्रिनय विश्वकलिसमर्द्धवन्द्यक ॥ ॐ ॥
 जाकिणीवामाखण्डनाहृदिनी २ वरुद्वीकिदन्तिविनासा ॥ ॐ ॥ रुद्रपिगवदम
 नरुद्रिसंवीयश्च वरुनयिअनूपय वरुद्रुददास्य ॥ ॐ ॥ १ ॥ वागयश्च
 उरुति ॥ यश्च मस्तपाशमविद्या समयाचार्यरुवस्मान् २ दगादिगसम्बन्धवाधि
 यात्र ॥ ॐ ॥ समयाअनन्दरुनमिहायि ॥ विवर्धनीयश्च वयिस्थान मठुतमा

॥ रुविगवर्धनी ॥

कृत्तिविश्वरुतिया २५ कं का ना व नि दान द वी दान य मिया वि घ्न नि वृत्त या ॥ ५२ ॥
 मय श्री मन्त्र द मा ५० का न च क ५० कं का य वि श्वरु तिया २५ ग या नि म वी या वि
 श्वरु तनी ॥ ५३ ॥ सि द ना द वा जि या न उ द म न प सा द २ मृ द्वा मि दान प
 श्वा न ध व प न अ व ध द यि या क ण पा च न न नि दै यि ॥ ५४ ॥ १२ ॥
 (५५) (५६) (५७) (५८) (५९) (६०) (६१) (६२) (६३) (६४) (६५) (६६) (६७) (६८) (६९) (७०)
 क न नी २ व क क न ड ना णि नि न य न २ मा न च उ न ग ण च द नि द वी क न गि क पा

व ध वा ॥ ५२ ॥ उ वि त न व सि त ना सा २ क म न कृ ति स द्र यि ता वा २ वा ज यि ना
 च मि स रु ज स न पि नी द वी क न गि क पा व ध वा ॥ ५३ ॥ च कि सि न क ण कृ त क
 क क क क सा ता २ सा थ वा च क क र्ति या ड म ख न च व र ण ना पु व रु ध नी द वी २ ॥ ५४ ॥
 ग व पु द या न न क क ध व क दा रि नि ह न क वा या २ सा वा ता व वि व जि त अ न क न
 ग म ण स र पि नी द वी २ ॥ ५५ ॥ व क प द सि त गै त ध वि या न व सि ता स
 क री ता २ म न रु न सि वि मा कृ प दा य ना पु ण मा मि थ वि ज णा गि नी द वी २ ॥ ५६ ॥
 ति

२५ म प द

नजननी ॥ ॐ ॥ पूर्वद्वगगतवक्रवर्णगी २०० गानयामिनिद्वी नीतवर्णगी ॥
 ॐ ॥ वायुवर्णा रुनिद्वी गीतवर्णगी २०० मरीयासनिद्वी लोवद्वी ॥ ॐ ॥
 मेमल्यसिवासनीद्वी रुविगवर्णगी २०० दिनेचठिकाद्वी कुमवर्णगी ॥ ॐ ॥ १०॥
 वयुहृज १ काननायक मदातव २०० स्वस्वीजसंतवनगरसदि २०० ॥ ॐ ॥
 स्वागक ॥ अथषट्कमन ॥ वज्रजागिनी रुववर्णगी २०० वननाथद्विसंज्ञान
 ॥ ॐ ॥ श्रीवयिधमसावस मदासखक विद्या २०० द्वीरुसीया अमरुवर्णगी

वज्रजागिनी ॥

न ॥ ॐ ॥ उजयिधमसावस मदासखक वीया २०० वगीतसर्वीयवान्धीद्वी ॥ ॐ ॥
 सगनुत्रपगादचतुर्थीरिषक २०० द्वीसीसावसमदा ॥ ॐ ॥ ११ ॥ विज्ञा
 प्रिका रुदिगीनपृथ्वी रंजावर्णगी २०० वपुर्वीरिषक २०० आस्वास्यामाना पियजागसंज्ञा वि
 गसत्तूपत्रविमउत्तरी ॥ वागपद्यति ॥ गावमाथ ॥ मउत्तसमयचक्रमउत्तसंपृ
 २०० द्वादशगुरुजचउचावववुन ॥ ॐ ॥ जानलुक्कवर्णगी सीववर्णगी गीनी २००
 यवाचुचाद्वीगावर्णगी ॥ ॐ ॥ जाकिरीनामाखउत्तरीसावपीनी श्वाविमव

मउत्तसमयचक्र ॥

वडवापियात्र॥ ५॥ कायवाकविरुप्रिनिहवनं २दानयगियाउराश्रवमात्र॥

५॥ यागयागिनीमनीः समवसंता २अष्टमममानधीहवनवाया॥ ५॥

॥ १८ ॥ वाग ॥ गान ॥ अमलप्रिदवसवात्रुविवाहिता २गिरुवनसवना

ववचकइया २गकिपीववगिनीवडावेवावनी॥ श्रीदवीगिगकिप्रितवमाता २

नाशिमउलमावहवनं २वरी २गिनिचक २दिनिप्रिनयना २प्रिनित २वयकन

प्रितनवापिता २अष्टमनिवडेनडागिनुपा २रगुमिसुगुमिवतददिसमागा २

२यागासकेतिमनया २रुमान ॥ मृत्तुखा २एवमं २गम २मविरेनाने २न २याग

॥ उद्विक्तागाद्विक्ताबाग २ज २नि॥

श्रीवक्रजागिनीपादसदना॥ ५॥ ॥ १९ ॥ ऊतादधान २कतहगिसफ २काखायवा

सकतददरुक्र २संयागयन २कमभमडा २गंधानवाग २कथिमेवहिव ॥ दगाह २वरी

गावइरुमान ॥ नमः २हका २नन २मधव २ग २यिस २तड २कानमनव ॥ गनाह २रु

नामगइ ॥ ५॥ ॥ धववससीविशददधव २सावदसा २रियकावमनव ॥ ५॥ ॥ द

दआतिर्गनयागधव २वजघ २ठा २समुद्रावमनव ॥ ५॥ ॥ मायाव २दतिनडा २गो २

सादियवडा २सत्वप २मधव ॥ ५॥ ॥ २० ॥ आगामनगा २कनकीरु २गोवी २वका

॥ अमलप्रि ॥

॥ नमः ॥ श्री ॥

श्रीलोकमनेलोकनेकोश... ॥ तदा वसानं च किं गामु गमको ॥ नृवं विधुवा क्रमसा पुता...

वि
वृ
॥

वसानं च कृणामु गमक मुखविधुवं यमना प्रताकं नधु कनियं कथिगं सनिन्द्रा ॥
आगमधुमत ॥ विचक्रुः च विगमि मधुतमा पृष्ठिगि आनन्दमवुनिधवा २ वजवावा
हि आलिगनं सर्ववृत्ता नावसस्मि स साकता ॥ कना हूँ कना कं कं हूँ जावा २ नीतवह
वतुर्वक्राप्रमिस्वविमया पवमा आनंदमवुनिधवा २ विश्ववक्र अर्धवन्दुजग
सामक्रुद्धवदातु आतवणस गमिता ॥ ५ ॥ वज्रघटगजचर्मठमन्त्रवद्वीग
धनविजमानन्दमवुनिधवा २ कवनिकपावचयवउपागधन विधुत्तवक्रागिनध

मधु कनियं कथिगं सनिन्द्रा ॥
विचक्रुः च विगमि मधुतमा पृष्ठिगि आनन्दमवुनिधवा २ वजवावा
हि आलिगनं सर्ववृत्ता नावसस्मि स साकता ॥ कना हूँ कना कं कं हूँ जावा २ नीतवह
वतुर्वक्राप्रमिस्वविमया पवमा आनंदमवुनिधवा २ विश्ववक्र अर्धवन्दुजग
सामक्रुद्धवदातु आतवणस गमिता ॥ ५ ॥ वज्रघटगजचर्मठमन्त्रवद्वीग
धनविजमानन्दमवुनिधवा २ कवनिकपावचयवउपागधन विधुत्तवक्रागिनध

॥ श्रीगोत्रा २

नेमा निजा नर्वि ॥

वा ॥ ५ ॥ दिगं विदिगं काकास्या दिगयमपादि याचः सदजा आनंदमवुनिध
वा २ नमामि २ श्रीचक्रवर्त्तव गगयुवव धिना ॥ ५ ॥ २१ ॥ आगमधु
मत ॥ नमामि २ यागमन्त्रनः ५ वहान जाकिनी पवमधवा २ इविगद्वन अतिधवव
नुदरा हान जाकिनी आलिगना ॥ कना हूँ कना हूँ ४ कना कं कं हूँ हूँ ॥ ५ ॥ ददि
नमजसनवामधनधन कवशगवक्र कपावा २ वज्रघट प्रियवायनसुन्दरीपदसिग
काधगुर्गवा ॥ ५ ॥ पदमवजपदमाधव रगवमिपावकुनिपृथ्वपदागा २ रा

विष्णुः

बलुगवन्नुसर्ववन्धन मोचय सर्वजगज्जावना ॥ ॐ ॥ विविधिमात्रवव विष्णुवि
नाशनमिद्विदिवप्रदाता २ सगुणुवचव ॥ सिनगगधविया आदिवृषयनम
धवा ॥ ॐ ॥ २२ ॥ निनडनय न विहीषममलि आकागवृष वरुवाववव
डकग उव्यकनायय कनालमूर्ख कयालि श्रीतवव सकनमानुका मधममना
ध ॥ ॥ वागमन्धनवरी ॥ ॐ ॥ आ ॥ ह्रुदुद्रुनकलाता ॥ मधुविमेषडडा
वृ ॥ पूजापूजिगपूजासंता व सत्वनयसीतवकुव ॥ खखखाहित अतिवसिदुमा

विष्णुः

पपघाटयविष्णुनरपका मियावसपीवसा विसः पवक्षनसर्ववसिना ॥ ॐ ॥
सर्वजगज्जावसहस्रयमयः पिगाधोमान्दाअयस्मावृष २ जकजाकिनादि अहम
स्वानः ॐ देवसिगुद्र २ रुकुथ ॥ ॐ ॥ समयावगुनुमागसिद्धिः गुहसीतव
दविठुद्धिः २ यथेयुः ॐ यथेव रुजसीपिवथः डिघथमातकामथ ॥ ॐ ॥
दानपगिसर्वकार्यसिद्धिः मनीवथसर्वसवपुदगान्किथ २ आवसीसावगथाग
गवयन १ सस्यकाननवकुथ ॥ ॐ ॥ २३ ॥ वागतेवव ॥ नावषट्कगज ॥ च

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

धन ॥ ॐ ॥ साव विमलकूटविगेहसागम २ गुण युन काठिया ॥ ॐ ॥ नमामि २
श्रीरुद्रजा २ गुण युन पृथिव्या ॥ ॐ ॥ २१ ॥ वागमरुदि ॥ सा ७ आगन ॥ कि
या २ सर्व वधन यिक वासि २ सा २ गुण वालन मठिय ससन्धान म कूटक म
दिगं वना २ ससमा नू व सन्धव वाया ॥ मरुत सन्दवी भा व कासा २ स म विवादि
प्र व ज वाया दि २ रुण मदि भा न सा वा २ भा ति य सा यन वन स रु म य २ रु य
रु व यि र्ग वा वा २ ग ग ल नी ला व रु व दि य क ता २ म रु म ७ त रा व नी ना ॥ ॐ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वि यं धन ष षां ग ॥ सा दिं ग वा सी व न प यि म यि ७ न रा व ना वा २ रु म वि वा दि प्र व ज
वा ना दि ॥ ७ म वि षु द ख रु णी धा वा ॥ ॐ ॥ गा व क लि ता व रु रु यी या आ ति र्ग
० २ स म ७ ३ व न ग जा वा २ स म या आ नै द ॥ रु लिं ग वा म ७ न २ स न्ध व व ज वा ना
दि ॥ ॐ ॥ २१ ॥ वा ग म ७ यी ॥ च कि क ७ न क ठि वा च क म ख स रु पि न गी य न ७
व न व गि ल मा ला २ स न व क च की ने या ॥ रा स वि रु पि त ॥ ग ग ल रु रु वी र्द नी वा सा वा
२ ७ म म मि रु व ॥ द रु मा व का वा २ रु ग ना थ म रु क ७ न्ना वा २ व रु क ना ल क सा थ

विष्णुविष्णु॥

धनिया क०८ थिवाइं खड्गं ग२ संप्रकाशित कमज विद्वानि गवा मदा सुखम वि
 पुगा॥५॥ ॐ ॥ वज्रवादिआ तिगण सम्वन नां वयी वरु वरुहं ग२ वाचनी
 काययिकी दं गिहं नृवं अर्द्धरुवरुन न५॥ ५॥ ॐ ॥ सदृज समणी नेया गावे
 न कर्त्तुया ह नृवचन पुगा सुपदा आतिगण दृतीता वरु विनास यि शून्य
 कर्त्तुना ॥ ॐ ॥ २१ ॥ वागहे ववि ॥ विविहं विह नृमा न विम सिव दन ग२
 वन नृसुवगण सुवन हृक नृ ॥ २२ नां वयि वन गा मि श्री सन्व नृवा २ वरु

१५५५

[illegible]

ॐ वक्रुडवाकिणी ॥ ॐ ॥ नमामि श्री योगानन्द वक्रुडवाकिणी २ विनिन रुडुद
वाकिणी वनव विनि ॥ ॐ ॥ पूर्व डरुव पश्चिम दक्षिण दिग्दशी जाकिनी
दशी नीच डसिक वाकिणी ॥ ॐ ॥ चतुर्वर्गं गुणरुत नलुदशी २ विनि विनि
दशी नाच विदशी ॥ ॐ ॥ रुविदुव वक्रुडवाकिणी २ अश्वगन वीदगी योगिनी सम
परीताव ॥ ॐ ॥ २० ॥ नागरी वि॥ गावक प॥ अष्टक पपाव दिग् विदि
गं रुवन ॥ ॐ ॥ सिवमाव चतुवग ॥ २१ ॥ गगन ॥ २२ ॥ गगन ॥ २३ ॥ गगन ॥ २४ ॥ गगन ॥ २५ ॥ गगन ॥ २६ ॥ गगन ॥ २७ ॥ गगन ॥ २८ ॥ गगन ॥ २९ ॥ गगन ॥ ३० ॥ गगन ॥ ३१ ॥ गगन ॥ ३२ ॥ गगन ॥ ३३ ॥ गगन ॥ ३४ ॥ गगन ॥ ३५ ॥ गगन ॥ ३६ ॥ गगन ॥ ३७ ॥ गगन ॥ ३८ ॥ गगन ॥ ३९ ॥ गगन ॥ ४० ॥ गगन ॥ ४१ ॥ गगन ॥ ४२ ॥ गगन ॥ ४३ ॥ गगन ॥ ४४ ॥ गगन ॥ ४५ ॥ गगन ॥ ४६ ॥ गगन ॥ ४७ ॥ गगन ॥ ४८ ॥ गगन ॥ ४९ ॥ गगन ॥ ५० ॥ गगन ॥ ५१ ॥ गगन ॥ ५२ ॥ गगन ॥ ५३ ॥ गगन ॥ ५४ ॥ गगन ॥ ५५ ॥ गगन ॥ ५६ ॥ गगन ॥ ५७ ॥ गगन ॥ ५८ ॥ गगन ॥ ५९ ॥ गगन ॥ ६० ॥ गगन ॥ ६१ ॥ गगन ॥ ६२ ॥ गगन ॥ ६३ ॥ गगन ॥ ६४ ॥ गगन ॥ ६५ ॥ गगन ॥ ६६ ॥ गगन ॥ ६७ ॥ गगन ॥ ६८ ॥ गगन ॥ ६९ ॥ गगन ॥ ७० ॥ गगन ॥ ७१ ॥ गगन ॥ ७२ ॥ गगन ॥ ७३ ॥ गगन ॥ ७४ ॥ गगन ॥ ७५ ॥ गगन ॥ ७६ ॥ गगन ॥ ७७ ॥ गगन ॥ ७८ ॥ गगन ॥ ७९ ॥ गगन ॥ ८० ॥ गगन ॥ ८१ ॥ गगन ॥ ८२ ॥ गगन ॥ ८३ ॥ गगन ॥ ८४ ॥ गगन ॥ ८५ ॥ गगन ॥ ८६ ॥ गगन ॥ ८७ ॥ गगन ॥ ८८ ॥ गगन ॥ ८९ ॥ गगन ॥ ९० ॥ गगन ॥ ९१ ॥ गगन ॥ ९२ ॥ गगन ॥ ९३ ॥ गगन ॥ ९४ ॥ गगन ॥ ९५ ॥ गगन ॥ ९६ ॥ गगन ॥ ९७ ॥ गगन ॥ ९८ ॥ गगन ॥ ९९ ॥ गगन ॥ १०० ॥ गगन ॥

नमाम नव वक्रुडवाकिणी ॥ ॐ ॥ हूं हूं हूं नमामि पञ्च जाकिणी पञ्च रुगाणि
हान जाकिणी सवन रुगाणि ॥ ॐ ॥ पूर्व डरुव पश्चिम दक्षिण चतु
रुवन २ विदुमाव विदुख विदुया वक्रुडवाकिणी वाव यमाव जाकिणी चतु
वक्रुडवाकिणी वक्रुडवाकिणी ॥ ॐ ॥ सिद्धिणी व्याधि रुक्म कडवाकिणी खल गपत्र
गुं रुगाणि रुक्मा २ जाकिणी दपिणी वड सिक वाकिणी वाव यमाव वक्रुडवाकिणी
वन ॥ ॐ ॥ जिन जन निदशी जाकिणी उरु पयि सवन पञ्च रुगाणि वक्रुडवाकिणी

[illegible]

गा. क. नागा. क. नागा. ॥ वामक. वाक. क. द. दिन. क. व. कि. २. द. ७. अ. रा. व. न. स. ॥ अ. हि.
 ता. ॥ ५२ ॥ स. य. म. उ. त. मा. य. न. न. द. व. म. म. र. ति. २. न. व. सि. य. मा. ना. वि. त्. सि. ता. ॥ ५३ ॥
 स. ग. गु. व. च. व. ६. सि. व. ग. ग. ध. वि. या. २. य. ६. मा. मि. व. क. दा. या. दि. आ. नि. र्ग. ना. ॥ ५४ ॥
 ॥ ३३ ॥ वा. ग. र. व. दि. ॥ अ. य. ७. य. वा. ७. वि. स. य. स. स. ॥ आ. ता. २. क. व. ति. क. पा. व. क. व. ध. व.
 न. ॥ ५५ ॥ च. न. पु. न. वा. क. दा. ग. दा. प्र. वा. क. ना. व. यि. सा. वा. न. व. क. व. २. दि. न. व. द. या.
 न. व. क. जि. न. ७. न. नि. य. व. क. दा. नि. वा. ॥ ५६ ॥ अ. य. ७. य. ७. वा. क. दा. ग. दा. प्र. वा. क. ना. व. यि. सा. वा. न. व. क. व. २. दि. न. व. द. या.

धनकवि॥

रुक्मि. चतुर्दशी॥ पूर्वमाजितु. दक्षिणपूर्वतु. पश्चिमधर्मतु. वेगवर्तु. शुक्रा
सुक्रासवस्वगिदवी. चक्रकान्तमात्रदामा॥ ५॥ ॥ वागविनासं॥ धनकवि
साधव. धान्य ~~मै~~ उत्तलिगया २ पूजनयासि. रावगात्रगिदवी. पीगव
रुमिकमुखी पट्टयुज्या. सतिगासनददिनवदवत्तमैजतिगा २ वज्रधवसाधव. शुभसि
वस. वामकव. रिकसुवर्तु. कवै २ धान्यमैजती. पुष्पापूरक. मणिमकूट गितसं. व्याधि
निधादिगा २ दिवावदितु. वगात्रपी २ चिकित्सवणविविधिवत्तविषुषणचिकित्समणि

वेदिना २ २ साधकलिगया. वसववि २ श्रीतकीधनधुनी. रुमनिधिगीदवा

अनिकवि॥

धाविगा. कमिमय २ वाभक्तिगवज्यानि. साकधवदहिम २ जतजन. वरूनजग २००
आदिदवगण. साक वावसाहिगा २ श्रीगुम्तात्कनूवजावायविजा॥ ५॥ ॥ ॥ ॥
वागवसीम॥ अनिलिवर्तु. उत्पन्नादवी. शुक्रवर्तु. सज्जतिगा २ कर्तु. कर्तु. पावना
पुलकवतिमषव. (आकिगा॥ ५॥ ॥ नमवास्तुतिसिद्धिआगीनीयागिनीमनमाहिगा २
अष्टसिद्धिसिद्धिदक्षादवि. विप्रमावखणिगा॥ ५॥ ॥ अनेगवदिसुवद्विदक्षाना
जा. विशवयदन् ५ दनी २ वज्रडाकिनीवज्रयागिनी. कावगसन् ५५॥ ॥ कव

अष्टमि नमः ॥

खण्ड-भद्रपावनमूककशिरयंकवा२मृदुमृदुवधुविग. लयायजिह्वाशयंक
वा॥ ५ ॥ दुष्कादविगकगावा. उगतसमानवापिगा. नाधववधसिद्धविया. श्रीवि
नृपाधिराधिरा॥ ५ ॥ ॥ मागसेववी॥ गावधय॥ अष्टभृंगान्ननकनकमणिम
य. नानावतनपकलिगा२चतुद्विपसंगम. मध्वभद्रमाय. श्रीवज्रसत्त्वगुर्विजयी
२सुभद्राभतमणिकिन्धसजा. तासवल्हटविनाडिता२श्रीगुग्गुलात्कव. संहमना
था. वल्लभगुत्तनिर्यागयामि२पथमगजश्रीगुग्गुमगुत्त. अर्चितावधकमलमि

२५५॥

[illegible]

२ कलभार्चन ॥

ॐ गिरि सौवीर वीर वंश नः कदिगदिगदि अष्ट स्मभान २ अनुरुग सर्वदव. धादगदिग
भवन्ति वयन सीता वं ॥ ५ ॥ गिरिवन तुल्य वक्राय रात्रा. गिरिवन तुल्य वक्राय २
गिरिवन नवनाना पुसा विव. रुतिंगवका कात्रा ॥ ५ ॥ अहिनी सिंगग तुल्य
वक्राय. कदिगवराव अत्रा वं २ अत्रा मवजराय वंधन मात्रय. रायमात्र गंधर्वा
रात्रा ॥ ५ ॥ ॐ ॥ राग रात्रा ॥ रात्रा ॥ कलगात्र न विधि धियै वापरात्रा-
पूजायामि न दवगंध २ विधि धिउपरा वन न्यगीगवत्र ॥ ॐ नमः ॥ धनिस्मिता ॥

ॐ वज्राम्नादकमञ्जुकिनीसमन्तावन्तुतावन्मद्वयत्रयशग(वमसत्रहि. श्रीलक्ष्मी
महाकाल. ॐ सप्तगिष्ठिगवर्जस्वाहा ॥ ५ ॥ कनकनूपमणि. वगनत्रविगद्यट. यी
चपन्नवडय(गारिगाश्रयैवामृगयैववगन. यैवाषधि४यैवविदिगी(र्थदकै ॥ ६ ॥
नागगण्डर्वाश्रुसहिता. वज्राचार्यमल्लन्यागमशगकिनीनाम्नाखण्डास्त्रपिनी. वी
र्वीश्वरवर्तेशगा ॥ ७ ॥ भगवन्मन्त्रव(ल. कवगावर्चनकं. अमगसखरुलदागुम
हाशनमज्ञं प्रहस्रखण्डमञ्जुलाकाव. ज्ञानगास्त्रवसदगम ॥ ८ ॥ ॐ ॥

अवनिनिगिरुगजा॥३॥

अममागलि॥अल॥अवननिसिगजानु॥नीतसमदहाशककलरिनशिष
अवदना॥अनागाशकशजानअवनकाधवाया॥निपिनघनदगी॥अशिगमंन
न॥पागखअशिरवनयाया॥ ५ ॥रुविदुववुक्का०००वदमायाशमालविघ्न
गेन॥गगुतायरुव॥ ५ ॥विविधिवगनमोसि॥लीकगदहा॥अगगविवा
किगववरुतदागा॥ ५ ॥०३॥नागरोलवी॥मिनित्रायन॥चगुवुक्काविदावाः
अवविसगिवापियः॥वायविथावा॥सामकलेयासाम॥नरुचवुमावाअवाधमभाहान॥

को

पुष्पाको ५०

निशाय

अय्यजय

वद्विचक्रादिया॥ ५ ॥वामदहिनकय॥सुत्रवायपाणिशकसयिवजानवआरु
मिआयीया॥ ५ ॥अहाघठाधनी॥उपायिचवजशवजपवघेनचियीसीशान्ध॥ ५ ॥
कर्तुवार्त्तग॥अत्यक्तवसामशकवद्रुयुगिस्वामउतसाम॥ ५ ॥०॥॥वागरोल
वि॥अय्यजयवाचलिसयल॥उतास्वव॥अखयइशखसीसावन॥अनरुनयासाय॥
हादहाप्रवाग॥नावयीमाव॥मितवात्रुल॥अजिनपदयानवगुहाप्रवाग॥जिनऊन
नीवजआगिनी॥अयजहाउआरनवगस॥अराशकवगिकयावधवणी॥अज

न२

(श्रीगणेशाय नमः)

यज्यं ब्रह्मसमस्वानपि विधिगुणवृत्तनवगितमाता २ जयजयनाखरुजगत्स
सायं पुणमा मिश्रयवाक्यलि ॥ ६ ॥ ॥ वाग ॥ कोयिप्रथियवाजांममनि
नैकं कोमां २ येनकापिधिउंभोवां २ के वृत्तकीयांयीनवां ॥ मेतयज्जैइववा
इयियां ॥ दिन्दिमकुंदिनू वाजयियां ॥ नैदि ववखांजयी गंधं २ मेयना पिऊं न
योयियां २ रुंवीकाले २ तं पनिया यियां २ इंइववां २ नयोयियां ॥ ७ ॥ चंडस
मककुं विमिद्रां २ के पूतवां वनयोयीयां २ मेतयि ॥ धनसो लिऊं २ नैदि

(श्रीगणेशाय नमः)

वृत्तांजयीयायां ॥ ८ ॥ पुंवनऊं गुंके वंयं २ गुंछासं धनं मेनियायीयां २ नीत
सुहृं गुं वंयं वयीयां २ नैदिऊं सुवां वनं येनमां मियां ॥ ९ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वाग एववी ॥ यवज्जगि ॥ कतिग वृत्तानव श्री चक्रसंबव कंकावा इवजिद्राज
वपमाना २ मांसाद्रु निमयमांससंज्ञता दानपगिययवा सुखरावकु ॥ खखा
खादिस २ गमकदरुना येचा मियात्रस अतिवलिना २ श्रीवृत्तयागिनी अकि
नीनामाखठवासा नृपीनिगा किरावकु ॥ कृषिसेवीव विषधवीमउता नव

श्रीगणेशाय नमः

नाटकवस. कितिकितायमाना २७ मन्त्रघठाधनिपुमदिगवादिग. दानपमि
याविप्रिविनाभीगा॥ ॐ ॥ यागिनीपंचदवी. पंचश्रुतिनयनातवलु. शुभ
भाकिदानपमिया २ मातातिनागने. वक्रवक्रसयना. श्रुतिमगरुससखमीक
रवलु॥ ॐ ॥ सर्वसिद्धान्तवाक्यजहृजांशोरकवद्रमावायनिताक. धेक
सा २ पत्रमाहृतिरुत्प्राणिसयना. अनुरवसर्वसत्त्वमाकृगमनी॥ ॐ ॥ ॐ ॥
स्वागकनयी॥ गिरुदाचापयिजागिनी. दहकवाविश्कमलकृतिसघन. कवद्र

गिरुदाचापि

नवियात्र॥ ॐ ॥ जागिनीपुष्पावीध. खनकनजीवयी २ भावामरुचम्वियात्र.
मकवसीपीवयि॥ ॐ ॥ कृपकृथागिनीतपमजायी २ मलिकववदियात्र. डाठि
यानसमानं॥ ॐ ॥ सामरुघनंधायकृचिकृगाविश्चंद्रसूर्यइयिपकनरुडा
॥ ॐ ॥ एनयिगुदातिरुम. कृष्णवीरा २ नययनातिमाध. डरयनविवा॥ ॐ ॥ ॐ ॥
स्वागकनति॥ श्रीमेशनाथवन. मसार्विनविजयाश्चंद्रहासखड्ग. नागवासदहृक
३॥ ॐ ॥ नमासिश्शीवीमेशकृमाया २ जगदिधवजगगुहृवन्नयापिगा॥ ॐ ॥

श्रीमेशनाथ॥

पूरु कधवशुग. पवमशुग्याया २ श्रीधर्मधागुल्लान. नपावमशुल्लकगा ॥ ५२ ॥
 गतत्ताथजगत. निर्वज्जनवाहा २ सर्वगा. मु विसावदपठितनिर्वज्जना ॥ ५३ ॥
 त्यागवित्तस ॥ दिशुज्ज. एकमुखवगगवव. (१२) नगनमकूटकंग. प्रिनिवावनी ॥ ५४ ॥
 नमादं विवृष्टा किनी. विश्वजननि २ गिउवनवा पित. जिनस्सनवयनी ॥ ५५ ॥
 दिनकववज्ज विवा सिगदधनि २ वामकवीतक वशुमावपीवयी ॥ ५६ ॥
 उत्तमा ५७ दियामम (१२) वगनपूववयंगगतपवसि ॥ ५७ ॥ श्रीविद्याधविद्वी

सुवननवमहिताऽसकवचिद्धिसिद्धिदहिनमाणा॥ ५० ॥ ॥ वागनिर्वच॥
विद्यीवीथमयत्नमनार्त्तगसत्तत्तावेत्तुसववत्तत्तुर्मागीयाऽजातिवक्रसुसुखीका
गसनीनाऽनूक्तमश्राविया॥ ५१ ॥ ॥ वामकवागकदहिनकववज्जन्मनकृत्क
गियाऽवक्तुनक्तुत्तायत्तविनायीववातिथीविद्याधविदधीकवयीया॥ ५२ ॥ ॥ ह्यम
उत्तमाऽऽदयीवनिनिचीयसीयाथीगियाऽकृत्यसंस्तवपिवयीवनिनिथव
रुमवयनडर्मागिया॥ ५३ ॥ ॥ अथीवथीनहायीवइन्द्रवाजऽश्रुवध्वश्रुतिनकाति

[illegible]

गोपबन्धनः ॥

हनवनागसयतः ॐ रुद्राश्वादिपुत्रमिकारणकालवर्ष ॥ ॐ ॥ कलकलिविन
 तिः उवयमहासद्यः तेषु सुखवगावृत्तसंगघयाविता ॥ ॐ ॥ जलध्वनवमघजल
 धायापुत्रः ॥ कण्डपकणः गालिकविर्ग ॥ ॐ ॥ श्रीरुद्रकवज्रगवृत्तः आगच्छयमहा
 मघसर्वनाम ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ वागवनावलि ॥ लंबाकवर्तवापवः शिनिनयनाश्कठि
 गालकवर्तिसिधुवर्तविता ॥ ॐ ॥ गनारुद्रं रंगं गनारुद्रं ॥ २ ॥ घायवज्रवृत्त
 धेयवगुसंध्याश्कृमूलकस्यधवि ॥ ॐ ॥ जलनिकृती मारुनी आकषणी

गणेशकृतम् ॥

आदिर्भक्तकल्याणकवचम् ॥ ॐ ॥ स्वर्गमध्यागावप्रितुवन्नगधपतिपूजिष्यामः
सर्वकार्यसिद्धि ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ नमः श्रीवज्रसत्त्वय ॥ ॐ नमः श्रीगणेश उताय ॥
वैदरुवादिनिमग्नसंतापनीं पण्णासयासत्तुं नृकप्रभादनं मयाज्ञानसंतापनं नमस्क
वज्रनाथायकं नमस्कृतवगावनी नमस्कृतुं नृपाय नमस्कृतुं नृपानाकिनी नमस्क
रुं नमनमा ॥ रक्षाहंत्वानमः सा मिगणचकार्येनभास्तुम् ॥ सप्तपदवगा पूर्णक
कला पविरुयाग गणमउत्तंगणचक्रमूकर्म भक्तपकमसायक यागिनीयाग ग
णमउत्तं ॥ दत्तान्नपापीवरुमगशाजनं पित्रिपुत्रसिद्धिमूकमी पीधुक्तवृत्तिग
सर्वसत्ता नवकप्र चक्रुताकानाविधइष्टमनस्ककर्म त्ववक्रपूरुपमितय
गु वधुतावन्त्यरुनिवृत्तयानि जमतिन तवभाकसाय ॥ सास्यामनारुव यावन्मा
त्यगीर्ग नृप्यरवाधीवन पूष्य सूर्गधविर्ग अज्ञाननागर्ग पचाववधूपदीप वरु
उपसक्तं वसमद्यपचाक्रम ॥ श्रीवज्रसत्त्वय वविशु महासखी त्वंसंसावइष्टवपविम
कैरव चवद्वर्द्ध ॥ गीधविपूष्यवत्तनेवद्यक् चक्रं नमामि गितरा ॐ नमो नमो ॥ न

मलुगं जिन वचन कनायक. नमस्तु श्रीयाग मन्त्र वचन नायक ॥ नमस्तु गुरु वचन क
नाकः ॥ नमस्तु गुरु श्री वचन कनायक ॥ नमस्तु गुरु श्री वचन वारि वचन नायक ॥ न
मस्तु गुरु अकिनी नामिका गथानमो नमः ॥ अदिनी खड्ग नाक. निवकु विना मस्तु वी
निर्ग ॥ काका सनाय दिगपाल कष. वी वचन विवी गगर्ध. नमस्तु गुरु निगध सीक म
रुन वचन विह. उपपि (ध) गुरु श्री पकृशा. कुं डी पकृशा. मस्तु पका मस्तु पक ॥ उप
मस्तु नक वा. पुदि वचन मस्तु निरि वर सीधा. वृद्धक. धर्मक. सीधक. नाथ गस्तु
नमस्तु गुरु गध वचन पकृशा ॥ मस्तु कि. कस्तु कुरु वचन किन ॥ विता विता वचन यता

विमकय. दिता गध मना कस्तु मस्तु. नमस्तु गुरु गध वचन मस्तु ॥ सीधक सर्वज गता
मना वचन पुद ॥ स वचन दानादि गध मस्तु सर्व विकल्प मस्तु गगर्ध. अकिनी रुनका दिना
य मस्तु पवि वस्तु ॥ जिन गुरु नस्तु नादय मस्तु पुद. गस्तु वार्य कपा काध. मस्तु सानिर्ग
पुद मय ॥ वास्तु वास्तु पकृशा मस्तु गुरु. सर्व सय सध पाय वचन पवि वस्तु. जिन गुरु
गस्तु नादय मस्तु पुद ॥ पुस्तु पाय मस्तु गगर्ध मस्तु वचन धि धन नास वस्तु पुद सा
वस्तु पवस्तु विरव. पुस्तु गिना ज श्रीय श्री गध वचन गध ॥ ० ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

उत्तम उत्तम अद्वितीय विभाज्य मूर्ति प्रसादः गंगा इति ॥ ॐ ॥ नमामि श्री वृंशना
 मतिशुद्धी देवी श्रद्धा धर्मधनुष विद्यातिगः निष्कली ॥ ॐ ॥ नमामि श्री सूर्य धन
 देवः दधवज्र (आतिगा श्रद्धा दधवज्र पुण्य गी विद्याविगा ॥ ॐ ॥ नमामि श्री म
 शवज्जनगी तव विगा श्रद्धा मामिथी पुद्गल निदवीः अद्वितीय दिदहिम ॥ ॐ ॥
 श्रद्धा गमातव ॥ मा ० गाल ॥ कनक वर्ण देवाः एकमुख विद्युत् श्रद्धा मकट कुंग नि
 धी वाच धी देवी ॥ ॐ ॥ नमामि श्री क्लाका मिनी ॥ श्रद्धा गमादिनी देवीः अद्वि

सु. श्रुत्वा नि नि या ॥

[illegible]

प्रकृतस्य धनधात्री ॥ ॐ ॥ नमामि श्रीमैत्रेयी परममनन्य श्रुता ॥ दहिगणपति
 वामश्रीमहाकोत। सगणमण्डल मांडपुष्पाणि गच्छिना ॥ ॐ ॥ गृहिर्सेवावयाया
 विश्वकर्ममा ॥ अष्टमहातयवद्व्याधिद्विगद्वय ॥ ॐ ॥ वज्रध्वजपुसादिव
 दासतनयिता ॥ गुर्वचर ॥ मानसिद्धिवज्रपुसादा ॥ ॐ ॥ ० ॥ मातवज्राग ॥ ग ॥
 मा ० ॥ वक्रवर्धकमुखरायनविद्विहजात्रका ॥ गिनयनदहिनरुद्रगजाध्व
 प्रणाय ॥ ॐ ॥ जगगर्सीसासवलातरुलपसादसिद्धिर्त्त ॥ जगगमनावाक्कासि

वक्रवर्धक
 गिद्वय

द्विरुत्तदहिम ॥ ॐ ॥ यक्षपादवसहिर्गद्वयगिसुन्दरीदवी ॥ अर्थसातयु
 वायसुर्मगला ॥ ॐ ॥ सङ्गुचवच ॥ पुष्पादसिद्धिम ॥ रावातावचन ॥ श्रीमवा
 ज्ञनमामि ॥ ॐ ॥ पद्ममातगिर्विह्निगवजा ॥ रुवावाय ॥ अमृगपुसादवविववि
 तथीतीमवाज ॥ ॐ ॥ ० ॥ अरुविना ॥ ग ॥ मा ० गा ॥ विकचक्रमलायविदिनक
 वमण्डल ॥ सिन्धुलवर्धमकानना ॥ तवअद्विरुत्तवितवदायनीयागिणी ॥ ॐ ॥
 दहिनवामपादक ॥ चित्रवध ॥ कवधावीकवगिन ॥ दनी ॥ अथागिणी ॥ ॐ ॥

वक्रवर्धक
 गिद्वय

